for the last seven years. This must set all your doubts to rest.

Now Madhu*ji* of CPM, my good friend, has asked me as to what is the major cause. I referred to two major causes. I cannot now substitute my judgement for the judgement of the Technical Committee. The Committee has arrived at the conclusion that there are two causes. I am not competent to respond to as to which one of the two is more important.

SHRI TIRUCHI SIVA: Cantilever piers were found defective. Will they be completed within 15 days time-frame?

SHRI S. JAIPAL REDDY: No, fifteen days period is meant for training and retooling of workers. What we are first doing is to get every cantilever pier checked, not only 18 piers which have shown cracks but every other cantilever pier. I will not be able to give a time-frame, but I am making a commitment in regard to thorough checking of every cantilever pier. Sir, well I thank all the hon. Members and I would like to assure them that this was a mishap. There was a fault in the process of construction of 67 piers. That has alerted us to all the negative possibilities. We will be on guard. From every accident, we also learn. I am sure DMRC which has done a wonderful job will learn more as an institution from this incident.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): Now, we shall take Special Mentions. Those who want to lay their Special Mention on the Table can do so.

SPECIAL MENTIONS

Need to take steps for proper management and conservation of religious places of archaeological importance in Jammu and Kashmir

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : महोदय, कश्मीर घाटी में आतंकियों द्वारा हिन्दू और मुसलमानों के बीच दरार पैदा करने की कोशिशों के बावजूद दोनों ही समुदायों में आपसी विश्वास कायम है, किन्तु दुर्भाग्य से सरकारी विभाग अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट रहे हैं। कश्मीरी पंडितों के घाटी छोड़ने के बाद पुरातत्व महत्व के और धार्मिक आस्था के केन्द्र मंदिरों में पूजापाठ का संकट पैदा हो गया है। इनके रख-रखाव और देखभाल से पुरातत्व विभाग के द्वारा अपने हाथ खींच लेने के कारण इनके ध्वस्त होने का संकट पैदा हो गया है।

लिद्दर नदी के किनारे लगभग 900 साल पुराने शिव मंदिर का रखरखाव कश्मीरी पंडित एसोसिएशन करता था, किन्तु उनके कश्मीर घाटी छोड़ने के बाद वर्ष 1989 से मंदिर राज्य पुरातत्व विभाग के पास आया गया। आतंकियों की धमकियों के बाद पुरातत्व विभाग ने धन की कमी दिखाकर रखरखाव से अपना हाथ खींच लिया, जिससे इनके ध्वस्त होने का भी खतरा पैदा हो गया है। मंदिर के दर्शन और पूजा बंद न हो, इसके लिए मुस्लिम समुदाय ने पहल करके एक अच्छा और सराहनीय कार्य शुरू किया है जिससे आपस में विश्वास और प्रेम बढ़ रहा है, किन्तु सरकार का उपेक्षापूर्ण रर्वया खेदजनक है।

मैं सदन के माध्यम से मांग करता हूं कि ऐसे पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण और पौराणिक आस्था व भाईचारे के प्रतीक स्थलों की उचित देखभाल और रखरखाव की व्यवस्था करे। धन्यवाद।